मनुष्य बनो

10/76

ःबर
६

वा० मू०
५-२५

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा,   प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

ःशक
याल फकीर चन्दजी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिये। वी०पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ५-२५ है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुँचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफसाफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २७	कार्तिक सं० २०३३ वि० अक्टूबर १९७६	संख्या १

विनती

तू दया का रूप प्यारे, तू दया भंडार है ।
कर दयादृष्टि दया मय, तुझ ही से अधिकार है ॥१॥
संत सतगुरु तुझको कहते, है नहीं तू जानता ।
मेरे अनुभव में दया, करुणा का तू अवतार है ॥२॥
मेरे दाता शीश पर, मेरे दया का हाथ रख ।
तू है दानी दीनबन्धु, जगत का दातार है ॥३॥
मेरे अन्तर में समाना, मेरे सांसों मांस में ।
तू है व्यापक यह समझ, दे सच्चा जो अधिकार है ॥४॥
आस रख कर गुरु कृपा की, नित करो अभ्यास तुम ।
रात दिन छिन छिन तुम्हारा, वह सदा रखवार है ॥५॥
छोड़ ममता छल कपट, चतुराई गुरु से नेह जोड़ ।
भक्ति उसकी कर वह सच्चा, प्रेम का भडार है ॥६॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी को सुमिर ।
राधास्वामी सर्व रक्षक, सर्वदा हितकार है ॥७॥

नव वर्ष की शुभ कामनाओं सहित

"मनुष्य बनों" का नया वर्ष

इस अक्टूबर अंक से "मनुष्य बनो' का २७ वां वर्ष आरम्भ हो रहा है। पर बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि अभी तक बहुत से ग्राहकों पर दो दो तीन तीन साल का चन्दा बाकी है। बार बार लिखने पर भी ग्राहक महोदय चुप हैं। यही कारण है कि हमें बहुत से ग्राहकों को पत्रिका भेजना बन्द करना पड़ा है। एवं पत्रिका को व्यर्थ में ही नुकसान उठाना पड़ा है।

हम चाहते हैं कि इस पत्रिका के माध्यम से गुरु महाराज एवं महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के विचारों को ज्यादा से ज्यादा फैला सकें इसके लिए हमें अपने ग्राहकों का सहयोग चाहिये यदि हमारे ग्राहक वन्धु अधिक से अधिक ग्राहक संख्या बढ़ाने में हमारा साथ दें। तभी यह कार्य संभव हो सकता है। यदि यह ग्राहक भाई इसके अधिक से अधिक नये ग्राहक बढ़ाने की कोशिश करें एवं समय से इसका चन्दा भेजते रहें तो हम अपने ग्राहकों को अधिक से अधिक सामिग्री जुटाने एवं पृष्ठ संख्या बढ़ाने में समर्थ हो सकेंगे।

पिछले वर्ष हमारे पूज्य पिताजी का शरीर हो जाने के कारण कुछ माहों में ग्राहक भाइयों की समय से सेवा न कर सके इसके लिये क्षमा चाहते हैं एवं आशा रखते हैं कि ग्राहक बन्धु "मनुष्य बनो" के प्रचार एवं ग्राहक संख्या बढ़ाने में हमारा सहयोग बनाये रक्खेंगे। एवं अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र ही भेज देंगे।

श्रीमती सुधा मीतल
पुत्र वधू स्व० श्री देवीचरन मीतल
प्रकाशक

दिल्ली में दशहरे के अवसर पर दाता दयाल का सत्संग

दाता दयाल दि० ३०-९-७६ को रात्रि के लगभग ९-३० बजे दिल्ली आचुके थे मगर रात्री से ही उनकी शारीरिक अवस्था बिगड़ गई थी। दिल्ली स्टेशन से सतसगी सज्जन महाराज को काफी नाजुक स्थिती में सालवान पब्लिक स्कूल तक ला सके। ३०-९-७६ की शाम से ही बाहर से आने वाले सतसंगियों का तांता लगा रहा। १-१०-७६ की सुबह ९ बजे तक लगभग १००० से ऊपर बाहर से सतसंगी पधार चुके थे। सभी का एक ही उद्देश्य एक ही भावना, एकसा ही प्रेम कि महाराज के दर्शन कर सकें उनके चरणों में अपना सिर रख कर उनकी धूल से अपने पतित शरीर को पवित्र कर सकें। उस महान सन्त को साक्षात अर्पण कर सकें। जिसके केवल सुमिरन मात्र से ही इस संसार के दुखों से छुटकारा मिल जाता है।

१-१०-७६ को प्रातः ९ बजे महाराज का सतसंग प्रारम्भ हुआ। शरीर कष्ट में था मगर आत्मा प्रबल थी। सतसंगियों की भावना ने दो घटे मंच पर बिठाये रखा और उनके दर्शनों का आनन्द लेती रही। उनको स्वयं उपदेश करने में असुविधा थी इस कारण २५-९-७६ का सतसंग जो उन्होंने विलारी में दिया था उसको टेप द्वारा जन समुदाय को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अनेक सन्त तथा महान विभूती भी मंच पर उपस्थित थीं जिनमें पीरेमुँगा जी दिल्ली आनन्दराव जी हैदराबाद, ताराचन्द जी हरियाणा मुख्य थे।

१-१०-७६ को शाम के तीन बजे पुनः महाराज का सतसंग हुआ जिसमें श्री आनन्दराव जी का भी प्रवचन हुआ।

।। मनुष्य बनो ।।

२-१०-७६ का सतसंग श्री ताराचन्द जी तथा पीरेमुँगा जी के प्रवचनों के पश्चात सम्पन्न हुआ ।

खाने का प्रबन्ध दिल्ली सतसंगियों के द्वारा ही आयोजित किया गया ।

महाराज ने अपने सारगर्भित प्रवचन में उपस्थित जन समुदाय को आग्रह किया कि इस संसार में गुरु के नाम पर पंथ बनाकर भोली भाली जनता लूटी जारही है । गद्दियाँ बनाकर जनता के पैसे से अपने सात पुश्तो तक का इन्तजाम किया जारहा है मगर सत्य बात कोई कहता नहीं है । हर मनुष्य को जो भी कुछ मिलता हैं वह उसके विश्वास से श्रद्धा से ही मिलता है । जो कुछ तुम चाहो वह तुम खुद हासिल कर सकते हो । दाता दयाल ने स्पष्ट करते हुए कहा कि मैं किसी सतसंगी के पास नहीं जाता मगर उनके भक्ती का विश्वास है कि दाता दयाल ने स्वयं आकर उनकी रक्षा की है । यह आखिर रहस्य क्या है । इसके उत्तर में श्री वशिष्ठजी ने जन-समुदाय को समझाया कि यह तो सत्य है कि स्थूलरूप से दाता दयाल स्वयं नहीं जाते मगर उनकी भावना उनकी आत्मा सतसंगी के पास अवश्य जाती हैं जिससे उसका उद्धार होता है । यह क्यों होता है क्योंकि यह महाराज एक परम पुरुष हैं, सत् पुरुष हैं, पूर्ण पुरुष हैं । दूसरे शब्दों में यों कहिये कि युगावतार हैं ।

सभी सतसंगी दाता दयाल का साक्षात्कार पाकर धन्य होगये ।

प्रभूदयाल मीतल

सम्पादक

मेरी अमरीका यात्रा

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर

दिनांक १८ जुलाई १९७६

(गतांक से आगे)

मन तू थकन थकत थक जाई।
बिन थाके तेरा काज न सरे है, फिर पाछे पछताई।

मैंने जीवन में बहुत अभ्यास किया और अब थक गया। अब आप लोगों की दया से मेरी यह थकावट दूर हुई। जो कुछ जीवन में मैंने समझा है अगर यह ठीक है तो जिन महात्माओं ने परदा रखा, दुनियां को सच्चाई ब्यान नहीं की लोगों को अज्ञान में रख कर उनके धन दौलत मान और प्रतिष्ठा ली, अपने डेरे और गद्दियां बनाई तो क्या यह तर गये। अगर कर्म का फल भोगना पड़ता है तो यह भी अपने कर्म के फल से न बचे होंगे और न बचेंगे। इनके जीवन के हालात को देख कर मैं डर गया। इसलिये मैंने जिन्दगी में पूरी सच्चाई से काम लिया है। पता नहीं मेरा अंजाम क्या हो। लेकिन मुझे इस बात से शान्ति है कि मैंने गृहस्थ में या अपनी नौकरी में या गुरु से या सत्संगियों से कोई धोखा फरेब नहीं किया अभ्यास करता था, अब थक गया। आप लोगों की दया से बात समझ में आगई। जो चीज प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है उसका अन्त नहीं मिलता लेकिन जब कभी वहां पहुंच जाता हूं तो अपने आप को भूल जाता हूं। सोचता हूं कि क्या तू गुमराह हो गया, नहीं। क्यों ? स्वामीजी महाराज ने कहा है—

नहीं सत्नाम न नाम अनामी।

वह क्या अवस्था है ? वहाँ पहुंच कर ढूँढने वाली चीज खुद

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

खतम हो जाती है। सतनाम या अनामी रहता है या नहीं, इसका किसी को कोई पता नहीं। क्योंकि वहाँ पहुंच कर वह खुद गुम हो गये। इसलिए उसको अनाम कह दिया। वास्तव में किसी को कोई पता नहीं कि वह क्या है। सब ने अपने अपने पंथ चलाने के लिये रोचक और भयानक बातें कहीं—

जब लग तो कर जीव रहतु है, तब लग परदा भाई।
टूटि जाय ओट तिनका की, रसिक रहै ठहराई॥

जब तक कोई मानता है तब तक परदा है। मेरा तिनका तुम लोगों ने तोड़ा। अब हुजूर दाता दयाल जी महाराज तो हैं नहीं इसलिये आप लोगों को सत्गुरु मानता हूं क्योंकि आप लोगो से मुझे यह ज्ञान मिला। यही हुजूर दाता दयालजी महाराज ने मुझे फरमाया था कि तुमको सच्चे सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब होगये। इसलिये अब अगर मैं आप को सत्गुरु न मानूं तो मैं दोषी हूं। कृषक की और दयालदास की सेवा मैंने की और अब भी करता हूं। दयालदास यहाँ रहा, उसके पास स्त्रियाँ आने लग गईं और यह बात मुझे पसन्द नहीं थी। मैंने दुनिया में मर्यादा कायम करनी है, तोड़नी नहीं। गो मैं जानता हूं कि यहां सब माया का खेल है। न कोई किसी का बाप है, न मां है, न भाई है और न बहन है। मगर फिर भी मर्यादा को कायम रखना जरूरी है। इसलिए मैंने दयालदास को कहा कि तुम्हारे पास स्त्रियों का आना ठीक नहीं है। इसलिए मैंने दयालदास को कहा कि या तो उनको बन्द करो या तुम खुद चले जाओ। मैं उसूल की बात करता हूं।

सकल तेज तज होय नपुन्सक, यह मति सुन ले मेरी।
जीवत मिर्तक दशा विचारै, पावै वस्तु घनेरी॥

नपुन्सक है नामर्द। जब मैं वहां जाता हु तो अपनी खोज के बाद मैं इस परिणाम पर आया हूं कि मैं कौन हूं ? जब मैं अपने आपको चेतन का एक बुलबुला समझता हूं तो इसका यह मतलब है

कि मैं कुछ नहीं बना और जब मैं बना ही कुछ नहीं तो फिर मैं नपुन्सक हुआ या नहीं। आज मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूं कि जो कुछ मैंने खोज की है वह ठीक है। वेदान्ती कहता है 'मैं ब्रह्म हूं" और सन्तों ने कहा कि जहाँ सन्त पहुंचे, वहां परमात्मा भी नहीं पहुँचा। सिवाय मेरे किसी सन्त ने यह नहीं कहा कि मैं चेतन का बुलबुला हूं।

या के परे और कछु नाहिं, यह मति सब से पूरा।
कहे कबीर मार मन चंचल, हो रहो जैसे धूरा॥

आप लोगों ने सन्तों की वाणियां पढ़ी हैं' किसी ने यह नहीं कहा कि मैं चेतन का बुलबुला हूं। मैंने कहा और कबीर साहिब ने उस पर मोहर लगा दी। अमरीका में मैंने कहा कि जब ब्राह्मणों का राज था तो ब्राह्मणों की गुडी चढ़ी। इनके बारे में ऐसी ऐसी बातें कही गई हैं कि लोग आज तक ब्राह्मणों के पाँवों को पूजते हैं। मुसलमानों के समय में मौलवियों और काजियों की गुडी चढ़ी। बौद्धों के समय भिक्षुओं की पूजा होती थी और जैनियों के समय में तीर्थंकर अरूज पर थे। इस वक्त सन्तमत या गुरुमत का जोर है हालाँकि स्वामी जी महाराज या हुजूर महाराज जी ने सन्तों के बारे में नहीं लिखा लेकिन बाद में इन गुरु लोगों के बारे में जो कुछ लिखा गया है उसको पढ़ कर या सुन कर हैरानी होती है। यह क्या कहते हैं कि जिस वृक्ष की दांतुन कोई सन्त करले तो उस वृक्ष को मनुष्य का चोला मिल जाता है। जिस जमीन की कपास के कपड़े कोई सन्त पहन लेता है उस जमीन का मालिक तर जाता है, उस कपास को जिसने काता है और जिसने उसका कपड़ा बुना है वह भी तर जायेंगे। अब तुम सोचो, कि कितना पाखण्ड है। इन गुरुओं ने अज्ञानी जीवों को अपने जाल में फँसाने के लिये किस तरह मन गढ़त बातें बना रखी हैं। इस तरह की रोचक बातों का नतीजा क्या है ? सुनो, अमरीका में मेरे सतसंग में एक ६५ साल

की विधवा स्त्री आई। उसने मुझ से कहा कि मैं Legal Cachelor हूं और आप भी Legal Bachelor हैं : अगर आप मुझसे शादी करलें तो मेरे पास दो करोड़ डालर की सम्पति है। मैं वह बेच कर मानवता मन्दिर में दे दूँगी। मैंने कहा कि न मुझे तेरे पैसे की जरूरत है और न ही मैं तुम से शादी करूँगा। हां अगर तुम वहां रहना चाहो तो या तो मेरी मां के रूप में रहो या मेरी बहन बन कर रहो और या मेरी लड़की बन कर रहो। उसने मुझे ऐसा क्यों कहा ? उन लोगों को इन नाम निहाद गुरुओ ने यह ख्याल दिया हुआ है कि किसी गुरू की काम वासना तृप्त करना गुरु की सेवा है इस सेवा से तुम सतलोक पहुंच जाओगे। कितना धोखा है और कितना फरेब है। तुम खुद सोचो कि यह तो उसको पता है क मैं ६० साल का बूढ़ा हूं और शादी के योग्य नहीं हूं और वह खुद भी शादी के योग्य नहीं है। तो फिर उसने किस लिए मुझसे शादी करने के लिये कहा ? इन महात्माओं ने दुनिया को अज्ञान में रख कर अपने झूठे मान प्रतिष्ठा और धन के लिए क्या २ नहीं किया।

मैं एक यार राय साहिब ज्ञानचन्द जी के गांव भंभूताड़ गया वहां मैंने सुखमनी साहिब की अष्ट पदी पर सत्संग दिया। मेरे सत्संग को सुन कर एक नौजवान लड़की और एक सरदार बहुत देर तक रोते रहे। सतसंग के बाद मैंने लड़की से कहा कि बेटी ! तू क्यों रोती है ? कहने लगी कि मैं सतसंग सुनने जाती हूं लेकिन मेरे घर वाले जाने नहीं देते वह मुझे पीटते हैं। उसने अपने हाथों पर मुझे जख्म दिखाये। मैंने कहा जब घर वाले तुमको रोकते हैं तो तू क्यों जाती है और क्यों मार खाती है ? कहने लगी मुझे बाबा सावनसिंह जी बुलाते हैं। तो फिर तुम बाबा जी से जाकर कहो कि वह न बुलाया करें। क्या तुमने बाबाजी से यह पूछा है कि तुमको मार क्यों पड़ती है ? नहीं।

तुम लोग यह समझते हो कि जो रूप अन्तर में प्रकट होता है वह कहीं बाहर से आता है। तुम भूल में हो। कोई बाहर से नहीं आता। यह तमाम महात्मा मेरे सामने मानते हैं कि वह किसी के अन्तर नहीं जाते लेकिन पब्लिक में कहने का उनको साहस नहीं है क्योंकि फिर पैसा नहीं आता। फिर मैंने सरदार से पूछा कि भाई ! तुम क्यों रोते हो ? कहने लगा कि मैं बाबाजी महाराज का पाठी था। मैंने सात नौजवान लड़कियों का सत लिया है। और अब अपने पापों पर रोता हूं। दुनियां मूर्ख है। कई लोग मेरे रिक्शा को मत्था टेकते हैं या मेरे रिक्शा चलाने वाला जो आदमी है उसको मत्था टेकते हैं। लोग भ्रम में हैं। तुम लाख रुपया दो और लाख मत्थे टेको तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। बेड़ा पार करना है तुम्हारे अमल ने। तुमको गुरू की सेवा का पता नहीं है, गुरु को खुश करना क्या है, गुरु की बात को समझ कर उस पर अमल करना।

मैं अमरीका मैं बीमार होगया। सोचा कि फकीर ! तेरा बुढ़ापा है। ९० साल की आयु है। तुमने क्या लेना है इस काम से ? दिल में उदासी आगई। जो कुछ वहाँ लोगों ने दिया मैंने सब बांट दिया। यहां तक कि अपना बिस्तर भी वहाँ दे दिया। इत्तफाक की बात है कि वहां मुझे किसी ने एक किताब पढ़ने के लिये दी जिसमें पण्डित नेहरू ने इन्द्रा के नाम खत लिखे हुए थे जबकि इन्द्रा १४-१५ साल की थी। मैंने थोड़ी सी पढ़ी। उसमें पण्डित नेहरू श्रीमती इन्द्रा गांधी को बहुत हित दिया है। सोचा कि पण्डित नेहरू के हित से आज इन्द्रा गांधी क्या कुछ नहीं कर रही है। तुमको तो हुजूर दाता दयाल जी महाराज ने इतना हित और सँस्कार दिया है और तेरे सम्बन्ध में उन्होंने जो कुछ लिखा है आज तक किसी गुरु ने अपने चेले के बारे में नहीं लिखा तो तुम क्यों उदास हो रहे हो। इस विचार द्वारा मुझे उत्साह होगया और मैंने काम करना शुरू

कर दिया। तो गुरु को खुश करना क्या है ? हुजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज को या बाबे फकीर को तो तुम खुश कर सकते हो मगर असली गुरु कौन है और उसको खुश करना क्या है ? सुनो—

घट में दर्शन पाओगे सन्देह कुछ इसमें नहीं।
मैं तो घट में हूं तुम्हारे ढूंढ लो मुझको वहीं ॥
शब्द सुनते हो मेरा अन्तर में चित को साधकर।
सुरत मेरा रूप है इसको समझ लेना यहीं।

अब बताओ कि गुरु को खुश करना क्या है ? अपने आपको चिन्ता रहित और शोक रहित रखना और दिलगीर न होने देना। संसार में अहिंसा परमोधर्मा क्या है ? संसार में तो यह हर समय चलता रहता है। अपने आपको खुश रखना ही अहिंसा परमोधर्मा है और यही हमारा परम धर्म है। मैं जो कहता हूं उसको सुनो, समझो और उस पर अमल करो, तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा। सत्संग में जाके गुरु की सेवा किया करो। गुरु की सेवा क्या है ?

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लेव तिस सार, काढ़ सार तिस करे अहार ॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई जग भव भय सब गई गवाई।

अगर गुरू को रुपये देने से या कपड़े देने से कोई तर जाता तो यह बड़े बड़े सेठ अपने पैसे के बल से सब तर जाते। यह लेना देना तो संसार का व्यवहार है। जो दोगे वह मिलेगा : मैंने अमरीका में भी यही कहा कि ऐ मानव ! तू अपने आपको पहचान। मैंने बड़े २ वेदान्तियों के हालात भी देखे। अपने कर्म का फल सब को भोगना पड़ा। अमरीका में इन गुरुओं ने गलत शिक्षा फैलाई है। मैं वहाँ International University में गया। वहाँ मेरा भाषण था। वहां सन्त कृपालसिंह जी और बाबा चरणसिंह जी महाराज के चेले भी थे और वहां भारत के अमरीका में सफीर श्री कौल साहिब के सेक्रेटरी साहिब भी मौजूद थे। मैंने वहाँ अपने भाषण में कहा कि

कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता, न बाबा चरनसिंह जी, न सन्त कृपालसिंह जी और न कोई और गुरु। तो हमारा एक भारती भाई जो इनमें से किसी डेरे का चेला था वह उठकर कहने लगा कि वे जाते हैं। मैंने उससे कहा कि जब उन्होंने मेरे सामने माना है कि हम नहीं जाते तो तुम कैसे कहते हो कि वे जाते हैं? वह चुप हो गया। मेरे भाषण के बाद श्री कौल साहिब के सैक्रेट्री साहिब ने भाषण दिया और कहा कि बाबा फकीर साहिब ने जो कुछ कहा है यह बिल्कुल ठीक कहा है। वहां मेरे पास एक पादरी आया। मैंने उससे पूछा कि क्या आपका रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है? उसने कहा कि हां! तो क्या आप लोगों के अन्तर जाते हैं? नहीं। तो फिर लोगों को सचाई क्यों नहीं बताते? वह मान गया। मैंने वहां कहा कि मैंने "मनुष्य बनो" की आवाज उठाई है। "मनुष्य बनो" कोई धर्म नहीं है। सिवाय तुम्हारे कर्म और अमल के कोई दूसरा तुमको तार नहीं सकता। गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। बाहर के गुरु ने तो केवल तुमको उपदेश करना है और मार्ग बताना है अमल करना तुम्हारा काम है। हर एक आदमी के अन्तर से Radiation निकलती है। परमार्थ की भी, स्वार्थ की भी, बदी की भी और बीमारी की भी लेकिन आदमी को पता नहीं। यदि गुरु आमल नहीं है तो जो कुछ भी उसके अन्तर में होगा वही तुम कबूल करोगे। उदाहरण देता हूं। मेरा एक दोस्त श्री मंगलसैन का लड़का बसराबगदाद में रहता था वहां एक मकान के बारे में प्रसिद्ध था कि इसमें कोई भूत रहता है। उसको कोई किराये पर नहीं लेता था। मंगल सैन का परिवार राधास्वामीमत का पैरोकार है। लड़के ने सोचा कि हमको भूत कुछ नहीं कह सकता इसलिए उस मकान को थोड़ा किराया देकर लेलिया लेकिन उसकी स्त्री के दिल में भूत का डर जरूर था। वह मेरा ध्यान करने बैठ गई। मेरा रूप प्रकट हुआ और कहा कि मेरी स्त्री मर

गई है। स्त्री ने अपने पति को बताया। उसने अपने पिता मंगलसैन को लिखा और मंगलसैन ने मुझे यह घटना लिखी मैंने उसे उत्तर दिया कि फलां तारीख को मेरी स्त्री चोला छोड़ गई है। अब मैं अपने आपसे पूछता हूं कि क्या तू उसके अन्तर गया था और तुमने कहा था कि मेरी स्त्री मर गई है ? नहीं ! न मैं गया और न मुझे कोई पता है। उसके विचार की धार मुझ पर आई क्योंकि मेरे दिल में यह था कि मेरी स्त्री मर गई है इसलिए मेरी Radiation से उसको यही मिला। इस वास्ते मैं कहता हूं कि जो कुछ गुरु के अन्तर में है वही तुमको मिलेगा। जो गुरु सचाई वर्णन नहीं करते उनकी Radiation भी वैसी ही होगी और उसका असर तुम पर पड़ेगा। इसलिए ऐसे गुरुओं से तुमको सचाई नहीं मिल सकती। सन्तों के मार्ग में कहा गया है।

गुरु को मानुष जानते सो नर कहिए अन्ध।
दुखी होंये संसार में आगे जम का फन्द ।।

गुरु को कभी हुजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज या बाबा फकीर मत समझो। गुरु तो आयडियल है। उसको पूर्ण मानो। गुरु चाहे दस नं० का बदमाश ही क्यों न हो लेकिन अगर तुमने उसको पूर्ण माना हुआ है तो तुम्हारा परिणाम अच्छा होगा। मैंने अमरीका में भी यही कहा। वे लोग मेरा ध्यान करते हैं और उनकी मनोकामना पूरी हो जाती हैं। यह आवश्यक नहीं कि गुरु ही मानो, तुम उसको सतपुरुष मानो, भाई मानो, दोस्त मानो; मतलब तो उससे प्यार और प्रेम करने से है। अगर मेरा ध्यान करने से तुमको शान्ति नहीं मिलती तो इसमें मैं दोषी हूं शर्त यह है कि तुम मेरे पास शान्ति के लिये आओ। लेकिन तुम लोग तो संसारी इच्छाओं के लिए आते हो। मगर नियमानुसार ये भी पूरी होनी चाहिए। इसका नियम क्या है ? लकड़ी जलकर कोयला बन जाती है तो वह भी वही काम करती है जो आग करती है।

मैं इस संसार में सन्तमत की शिक्षा को साफ करने और सचाई बताने के लिए आया हूं जिसक इच्छा हो मेरे पास आये जिसकी इच्छा न हो वह न आये। मैं नियम की बात कहता हूं। अगर सच पूछो तो जिन गुरुओं ने परदा रखा और सचाई वर्णन नहीं की और लोगों को अज्ञान में रख कर उनसे मान प्रतिष्ठा और धन धान्य लिया मैं उनकी गलतियों को साफ करके उनका कल्याण कर रहा हूं ताकि यदि गलतियों के कारण उनको कोई सजा मिली हुई हो तो वे इस सजा से छूट जायें। अब जमाना बदल गया।

गुरु ने चोला बदलया सिदक न हारे सिख।

गुरु का चोला बदलना क्या है ? वर्णन शैली को बदलना। गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। मैंने समयानुसार वर्णन-शैली बदल दी है।। पहले जो इशारे थे और शब्द थे जिनके कारण बात को परदे में रखा गया था मैंने उसको बदल दिया है। अमरीका में मैंने कहा कि हजरत ईसा मसीह ने कहा है कि मैं Light (प्रकाश) हूं और तुम भी प्रकाश हो, बाइबल में लिखा है कि अगर कोई आदमी वहाँ जाना चाहता है जहाँ से हजरत ईसा मसीह आया है तो उसको प्रकाश का साधन करना चाहिये। रोशनी का साधन ही गायत्री मंत्र है। नूर का जिकर मुसलमानों में भी है। सन्तों के मार्ग में भी प्रकाश और शब्द का साधन है। सब धर्म प्रकाश और नूर को मानते हैं। हजरत ईसामसीह ने कहा है 'word was with God and God was with word" (आवाज खुदाके साथ थी और खुदा आवाज के साथ था) हिन्दुओं में भी पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म का जिकर है। इसलिए खुदा के मिलने का अगर कोई रास्ता है या सच्चे खुदा से वसाल का अगर कोई उपाय है तो केवल अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को प्रकट करना है। मेरी समझ में नहीं आता कि हिन्दू मुसलमान, ईसाई या और धर्म जो नूर को मानते हैं उनमें मत भेद क्यों है। अपने अनुभव के आधार पर

कहना चाहता हूं कि ईसाई बेशक गिरजा घर को पूजें या Slab को को मत्था टेकते रहें, हिन्दू बेशक मूर्ति के आगे मत्था रगड़ते रहें और मन्दिर बनाते रहें और मुसलमान बेशक मसजिद में बाँग देते और नमाज पढ़ते रहें, वसाले खुदा नहीं हो सकता और यही बात मैं भारतवर्ष में भी भिन्न भिन्न धर्म पंथ वालों से कहना चाहता हूं कि मन्दिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों और डेरों में खुदा नहीं है। वह नूर प्रकाश और शब्द स्वरूप है। इसलिये अपने अन्तर में चलो और शब्द को पकड़ो।

अब भारत वासियों को एक और बात कहना चाहता हूं कि लाख तुम शब्द योग का अभ्यास करो और लाख अपने अन्तर अन्तर प्रकाश को देखो, तुम्हारा आवागवन से छुटकारा नहीं होगा, हाँ, प्रकाश और शब्द के साधन से तुमको जो अनुभव होगा अगर वह अनुभव तुम्हारे दिमाग में बैठ जाये तब आवागवन से तुम्हारा छुटकारा हो जायगा वरना प्रकाश और शब्द में जाने के बाद तुम्हारी सुरत को प्रकाश और शब्द के मंडलों में रहना पड़ेगा। वहां वहां सुख है आनन्द है और शान्ति है। यह ठीक है मगर फिर जब Evolution होगा तो तुम्हारी सुरत को फिर वापिस आना पड़ेगा जैसे राम और कृष्ण का जब अवतार हुआ तो जो रूहें ब्रह्म लोक या विष्णु लोक में थीं वह इनके साथ कोई गोपी बनके आई, कोई गोप बनके आया कोई हनुमान या बानर बन के आया। रामायण में या भागवत में ऐसा लिखा है। मैं दावा तो नहीं करता मगर अनुभव मानता है कि ऊपर के मंडलों से निकले लोगों में आकर काम कर जाती हैं। उनमें से एक मैं हूं जो सृष्टि के क्रम के अनुसार इस सचाई को खोलने के लिये इस फकीर के चोले में आया हूं। यह बड़े बड़े सन्त स्वामी जी या सन्त कबीर साहिब यह सब वहीं से आते हैं और जो मुक्त हो जाते हैं उनके लिये आना जाना नहीं है। मुझे खुद पता नहीं कि मेरा क्या होगा।

सन्तमत में यह कहा जाता है कि स्वामी जी महाराज या कबीर साहिब सतलोक से आतें हैं। अगर यह स्वतः सन्त सत्लोक से आते हैं तो फिर इनका आवागवन कैसे खतम हुआ क्योंकि सतलोक में तो हस्ती मौजूद है। आवागबन तो अगम और अनामी में जाके खतम होता है। तभी तो स्वामी जी महाराज या गुरु नानक साहिब या कबीर साहब सतलोक से आये।

मैंने यहाँ Free Eye Hospital खोला है जिस का खर्च बहुत ज्यादा है शायद न चल सके। यहाँ ट्रस्ट है जो रुपया यहाँ आता है उसमें से कुछ बचाना पड़ता है और बाकी खर्च करना पड़ता है इसलिये यह हस्पताल खोला है। इसलिये अगर कोई भाई बहन इस में मदद करना चाहते हैं तो हम उनके बहुत आभारी होंगे। अगर न चल सका तो हस्पताल को बेशक बन्द करना पड़े लेकिन किताबों का प्रकाशन बन्द नहीं किया जायेगा।

सब को राधास्वामी

चमत्कार

(परम सन्त परमदयाल बाबा फकीरचन्दजी महाराज)

आज कल अनेक समाचार पत्रों में सन्त सांई बाबा के चमत्कारों पर बहुत कुछ चर्चायें चल रही हैं। उनके भक्त उनके पास में तथा दूसरे उनकी आलोचना करने वाले हैं। मेरी आयु ९० वर्ष की है। मैं सात वर्ष की आयु से इस धार्मिक खोज में अर्थात राम से मिलने की उत्कट इच्छा से सतत प्रयत्नशील हूं। जहां दूसरों को अपना अनुभव कहने का अधिकार है वहीं मैं भी अधिकार रखता हूं कि कि अपने अनुभवों का उल्लेख करूँ।

मैं जो कुछ कहूंगा वह अपने निजी अनुभव के आधार पर कहूंगा यह संसार मनोमय जगत है। संकल्पमय जगत है या माया देश है। यहां विचार या वासना काम करती है। मैं चमत्कारों को किसी सीमा तक सत्य मानता हूं। चमत्कार वह है जिसके होने के कारण का पता न हो। वास्तव में चमत्कार कोई वस्तु नहीं है। यह तो संकल्प शक्ति है। मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? कितने ही स्त्री पुरुष मुझ पर विश्वास करते हैं और जब वे किसी कष्ट में होते हैं तो मुझे याद करते हैं और मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है तथा उचित मार्गदर्शन करता है किन्तु मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मुझे इसका कोई पता नहीं होता। आजकल भी एक अमेरिकन स्त्री यहां मानवता मन्दिर में आई हुई है। मैं जब इस वर्ष अमेरिका गया तो इसने चार पृष्ठ का एक पत्र मुझे भेजा कि मैं अमुक तिथी को उसके अन्तर में प्रकट हुआ और उसे निर्देश दिये। वह एक निर्धन स्त्री है। उसने अमेरिका में भी कहा और यहां भी बताया कि उसने बैंक से २५ डालर निकलवाये तीन दिन के पश्चात जब उसने देखा तो बटुए में १७८ डालर थे। वह यह विश्वास करती है कि यह मेरा चमत्कार है किन्तु मुझे इसका कोई पता नहीं। मेरे जीवन में अनेक ऐसी घटनायें हुई कि जब मुझे कोई कष्ट सताने लगा तो मैंने गुरू महाराज का ध्यान किया और मेरा कष्ट येन केन प्रकारेण दूर होगया। इससे यह सिद्ध होगया कि यदि मनुष्य का मन सच्चा होकर अपने इष्ट या कि रूप के सहारे अपने अन्तर में अपनी ध्यान शक्ति को बढ़ा सकता है तो उसका विचार घना होकर स्थूल रूप धारण कर सकता है। मेरी आँखों देखी तो सत्य घटनायें हैं। प्रथम तो "शिववाडी' गगरेट के पास जिला ऊना (हिमाँचल प्रदेश) में है। वहां एक साधु रहता था जिसने १२ वर्ष तक असन्तरूप से तप किया था। वह बालकों के साथ जोकि वहां पशु चराया करते थे खेला करता था। उसमें यह शक्ति थी कि वह बालकों को मिठाई या

इच्छित वस्तु अपना हाथ ऊँचा करके अपनी मुठ्ठी में से उन्हें दे देता था हिंसक पशु एवं सर्प आदि भी उसके निकट रहते थे किन्तु वे परस्पर हानि नहीं पहुँचाते थे। दूसरी घटना इस प्रकार है—फरीदकोट स्टेशन पर जहां मैं स्वयं स्टेशन मास्टर था, मेरे रिटायर होने के बाद वहाँ एक साधू आया, जिसे कमली वाला साधू कहते थे। वहां से मोहनलाल नामक गुड्सक्लर्क आया और उसने मुझे बताया कि कमली वाले साधू से जो जिस वस्तु की माँग करता है वह हवा में अपनी मुठ्ठी घुमा कर मुठ्ठी में से वही वस्तु दे देता है। वह औरतों से पर्दा करता हैं। वह शीतकाल में १०० घड़ा ठण्डे पानी का मँगबा कर उससे नहाता है और गर्मियों में पंचाग्नि तप करता है। मैंने मोहनलाल से कहा कि क्योंकि शीतकाल में वह ठन्डे १०० घड़े जल से नहाता है तथा ग्रीष्म काल में पंचग्नि तप करता है इससे उसका मन एकाग्र होगया है और उसमें सिद्धी शक्ति आगई है। क्योंकि मन एकाग्र होने से सिद्धि शक्ति आजाती है। किन्तु स्त्रियों से घृणा करने के कारण वह किसी न किसी दिन किसी स्त्री को भगा कर ले जायेगा। डेढ़ दो वर्ष पश्चात वह एक स्त्री को लेकर भाग गया। उसके मन में एकाग्रता थी और स्त्रियों के प्रति घृणा का विचार था। वही घृणा का विचार उसका सुमिरन बन गया। अतः वह साधू जिससे घृणा करता था, उस ही के बश में आगया।

मेरा विचार है कि सांई बाबा के या तो पूर्व जन्मों का कर्म फल है या कोई इस जन्म की सिद्धि है। उसने कुछ न कुछ ऐसा किया है जिससे मन की एकाग्रता बनी है और वह ये कार्य कर सकता है। किन्तु सिद्धि शक्ति करने वालों का परिणाम हितकारी नहीं होता। जब तक उसे पूर्ण गुरु प्राप्त न हो जाए। मैं कोई परामर्श तो नहीं दे सकता किन्तु इतना अवश्य जानता हूं कि मनुष्य के विचार में बड़ी शक्ति है। और यह भी हो सकता है कि जैसे मदारी परदा रख कर अनेक वस्तुयें दिखा देता है और खेल कर देता हैं।

यह भी सम्भव है कि वे ऐसा भी कर सकते हों।

जो लोग सिद्धि शक्ति देखकर किसी को गुरु मानते हैं वे भूल में हैं। गुरु नाम है ज्ञान का समझ का और विवेक का। सिद्धि शक्ति तो आध्यात्मिक दृष्टि से बच्चों का खेल है। जो महात्मा यदि सिद्धि में आजाता है वह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता। जहां तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है, मैं तो यह समझता हूं कि जो भी कुछ है वह दूसरे मनुष्य का अपना विश्वास कार्य करता है और विश्वास भी वहां कार्य करता है जहां किसी के भाग्य में कोई वस्तु होती है। मेरे जीवन में लगभग २५० स्त्रियां मेरे पास आई जिनके कोई बच्चा नहीं था, वे मुझसे प्रसाद ले गई और उनके सन्तान हुई। उनमें से दो स्त्रियां तो ऐसी थी जिनकी अवस्था भी ५० वर्ष से अधिक थी और उनका मासिक धर्म भी बन्द था किन्तु उनका विश्वास था और उन्हें भी सन्तान की प्राप्ति होगई। इधर मेरी लड़की के विवाह को बीस वर्ष हो गये। मैंने उसे कई बार प्रसाद दिया किन्तु उसके यहां कोई सन्तान नहीं है। इसीलिये मैं कहता हूं कि यह सारा खेल मनुष्य के विश्वास का है। जो मनुष्य अपने अन्तर में अपने इष्ट की मूर्ति बना सकता है उसकी Will power संकल्प शक्ति बढ़ जाती है। उसकी संकल्प शक्ति एवं विश्वास के कारण उसके कार्य पूर्ण होते रहते हैं। मैं ऐसा क्यों कहता हूं। दो तीन लड़कों ने मुझे बताया कि जब वे परीक्षा देने गये तो प्रश्न-पत्र अत्यन्त कठिन था वे उसका उत्तर लिखने में असमर्थ थे। उन्होने बताया कि बाबाजी आपको याद किया। आपका रूप प्रगट हुआ और हमारे डैक्स के नीचे बैठ गया और हमको सम्पूर्ण पत्रोत्तर लिखवा दिये और हम ९८ प्रतिशत अंक प्राप्त करके उत्तीर्ण हुए, किन्तु मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मुझे इसका कोई पता नहीं। अनेक व्यक्ति कहते हैं मैंने उन्हें जाग्रत अवस्था में दर्शन दिये उनके अनेक कार्य भी किये, किन्तु मुझे उनका कोई पता नहीं। इसलिये

जो आलोचक हैं व्यर्थ कीचढ़ उछालते हैं मैं उनसे निवेदन करता हूं कि ऐसा मत करो। सांई बाबा के चरण कमलों में प्रार्थना करूँगा कि अपना ध्यान सिद्धि शक्ति और वाध्यडम्बरों से हटा कर अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो। जिससे आवागवन से मुक्ति मिले।

अगर ऐसा नहीं करोगे, साई बाबा ! तो और जन्म लेते रहेंगे। आप स्वयं स्वीकार करते हो कि पिछले जन्म में भी आप सांई बाबा थे और चमत्कार करते थे और अब भी करते हो। इन चमत्कारों से छुटकारा पाओ।

अगर मैंने अनुचित कहा है तो मैं करबद्ध रूप से दोनों पासों से क्षमा प्रार्थना करता हूं। मैंने जो कुछ कहा है यह मेरा अपने जीवन का निजी अनुभव है।

———

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्दजी महाराज मानवता मन्दिर
होशियारपुर ता १५-८-७६

आप लोग आजाते हैं, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तुमको क्या मिला है जो दूसरो को बताना चाहता है। मैं अपनी किस्मत को कई दफा अच्छा व कई दफा बुरा भी समझता हूं ! किस्मत मेरी अच्छी है या बुरी है पता नहीं।

मैं एक साधारण हिन्दू था, उस भगवान को राम, कृष्ण या देवी देवता के रूप में मानता था। वैसा मानने में एक सहारा था, शांति थी। मौज ने एक घटना के द्वारा मुझे बदला। मैं एक समय वागांवाला

स्टेशन पर काम करता था, वहाँ पास में एक तीर्थ था, मैं भी वहाँ स्नान करने के लिये पैदल चला। रास्ते में मेरे सामने कृष्ण चलते थे, वंसी बजाते जाते थे, मैं उन्हें देखता भी था व वंशी भी सुनता था। एक स्थान पर कृष्ण ने मुझसे कहा गोबर खाले, मैंने गोबर खालिया। जब वापिस आया तो मुझे विचार आया कि कहीं भक्त-माल आदि में ऐसा वर्णन नहीं है कि किसी भक्त को भगवान ने गोबर खाने को कहा हो। यह जो गोबर खाने को कहने वाला है भगवान नहीं है। मैं दुखी होकर २४ घन्टे रोता रहा। उस समय एक दृश्य मैंने देखा—जिसके कारण दाता दयालजी महाराज के पास गया। दाता दयालजी के पास न जाता तो यह साधन सहसदल कमल, त्रिकुटी. सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा, वगैरह का पता न लगता। अच्छा हुआ जो इधर आया आवागमन से छूटने के मार्ग का पता चला, इसलिये अच्छी किस्मत वाला भी हूं और खराब किस्मत वाला इसलिये कि अब वह अज्ञान की भक्ती का आनन्द नहीं रहा।

बाणी में दाता दयालजी कहते हैं—

तुमने सतसंग से क्या पाया,
नहीं समझ में सार तत्व आया।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि सतसंग से तुमने क्या पाया। अगर पाया है ? कबीर साहब, दातादयाल जी महाराज या अन्य गद्दी वाले ही बता जाते कि तुमने क्या पाया तो मेरे जैसे आदमी को जिसने सचाई से चलकर इतनी उमर गुजारी शांति मिल जाती। मैंने क्या पाया है ? जो पाया है वही कहता हूं। इसलिये कहता हूं कि दाता दयालजी की आज्ञा थी कि शिक्षा को बदल देना। मैंने दाता दयालजी महाराज का संतसंग किया है ओ कहता हूं वह सार तत्व है। उनकी संगत से मुझे प्रेम, आनन्द, मस्ती, उत्साह तो मिला सिद्धी शक्ती भी आगई थी, मगर मुझे सार तत्व प्राप्त न हुआ।

इसके लिये उन्होंने मुझे यह गुरू का काम दिया था और कहा था फकीर ! तुमको सचाई, सच्चा सतगुरु सतसंगियों के रूप में मिलेगा। यह काम देता हूं, नाम दान दिया करो, सतसंग कराया करो। यह काम १९१८ में उन्होंने मुझे दिया था। वाणी में उन्होंने लिखा है—

तुमने सतसंग से क्या पाया।
नहीं समझ में सार तत्व आया॥

अपनी समझ के अनुसार दाता की ही आज्ञा से कर्मभोग वश कहता हूं कि दाता की संगत से मुझे सब कुछ मिला किन्तु सार तत्व नहीं मिला था। सार तत्व आप सतसंगियों से इस गुरु पदवी पर आने से प्राप्त हुआ। कैसे ? जब आप लोगों से पता लगा कि मेरा रूप आप लोगों के अन्दर प्रकट होकर या प्रत्यक्ष में बात करके आपकी उलझनों को दूर करता है, डूबते को बचाता है, विद्यार्थियों के पर्चे हल कराता है, मरते समय लेने जाता है, मगर वास्तव में मैं नहीं होता और न मुझे पता ही होता है—आप सतसंगी भक्ति से प्रेम से, अपनी श्रद्धा और विश्वास से मेरा रूप बना लेते हो। यहाँ यह अमेरिकन स्त्री आई है, आई० सी० शर्मा से मेरे बारे में सुनकर मेरा ध्यान करने लगी, मेरे साथ प्रेम करने लगी। बैंक से २५ डालर लाई कुल २०० डालर बैंक में थे पैसे की तंगी महसूस करती थी, तीसरे दिन वे २५ डालर इसके घर में १७८ होगये। इन बातों से मुझे पता लगा कि यह मनुष्य के मन की एकाग्रता की शक्ति का ही काम है। जिसकी जैसी तीव्र इच्छा होती है उसको वैसा ही उसका फल मिलता है यही सार तत्व मैंने समझा है कि विश्वास में और मन की एकाग्रता में बड़ी ताकत होती है। यही मैंने समझा और दाता दयालजी भी कहा करते थे कि जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मती वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी।

मैंने इस इस स्थान का नाम रूहानी सतसंग या राधास्वामी धाम नहीं रक्खा, मानवता मन्दिर या Be Man Temple इंसान

बनो" रखा है। मैं आपको कहता हूं कि नीयत साफ रखो, संगत अच्छी रखो. अच्छे भाव रखो, कर्म ठीक करो और विचार पवित्र रखो। क्योंकि तुम्हारे विचार के साथ विश्वास व मन की एकाग्रता की शक्ति आजाने से ही तुम्हारे काम बनते हैं—इस सार तत्व को दाता दयालजी महाराज की आज्ञा मानने से मैंने जाना है। इनकी दया व उनकी संगत से उनके प्रेम से मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर चलूंगा व जो अनुभव होगा वह दुनियाँ को बता जाऊँगा। मैंने अनुभव किया है कि जैसी आसा है बैसी बासा है, नीयत साफ रखना जरूरी है। जो भी अपने स्वार्थ के लिये हेरा फेरी करेगा उसको उसका फल भोगना ही पड़ेगा। कर्म के फल से कोई न बच सकेगा। अच्छे कर्म से शांति और बुरे कर्म से कष्ट होगा ही : मैंने देखा है कि बड़े बड़े महापुरुष और सन्त भी कर्म की सजा से न बच सके। जेसस क्राइस्ट सूली पर चढ़ाया गया, कोई उसकी गलती होगी या पूर्व जन्म का कर्म भोग होगा पिछले जन्म के कर्म नहीं होंगे तो इसी के कर्म होंगे। जेसस अहंकार में आगया था। यहूदियों का राज था प्रचारक होते थे वे यात्रियों से धर्म के नाम पर धोखा करते थे। उसने इन अज्ञानी प्रचारकों को हन्टरों से मारा। उनको कहता तुम धोखेबाज हो। वह अपने आपको परमार्थ का बादशाह भी कहता था। सम्भव है इसी कारण से कष्ट हुए हों। बाबा सावनसिंहजी पिछली उमर में सख्त बीमार रहे, दाता दयाल की धाम उजड़ गई, स्वामी रामकृष्ण परमहंस का क्या हाल हुआ, गुरू तेगबहादुर, गुरू अर्जुनदेवजी का क्या हाल हुआ ? इनके साथ ऐसा क्यों ? ये सब तो भक्त थे, माननीय थे, नाम भी जपते थे फिर भी इनको क्यों कष्ट हुये ? मैंने समझा है कि या तो उन्होने कोई इस जन्म में कर्म किया होगा अगर ऐसा न मानें तो फिर पूर्व कर्म कुछ होंगे जिसका फल भोगा। यह भी न मानें तो मैं हौसिले के साथ कहता हुं कि जिसने यह दुनियां बनाई है वह जालिम है। यहां

बिना कसूर यदि सजा मिलती है तो हम उसके राज में क्यों रहें ? या यह समझता हूं कि यह संसार किसी का खेल है। अब सार तत्व क्या हुआ ?

तुमने सतसंग से क्या पाया।
नहीं समझ में सारतत्व आया ॥

यह समझ में आया है कि इस सृष्टी को बनाने वाला संकल्प है, विचार है, वासना है। यदि हम वासना, विचार अच्छा रखें तो हमारा जीवन श्रेष्ठ और आनन्दमय बना सकते हैं। यदि सदा के लिये सुख चाहते हैं तो इस भवसागर से निकल जायें ! यहां सुख नहीं है। यदि ऐसा मानते हो कि कोई तुम्हारा दोष नहीं है और यदि सताये जारहे हो तो मन से परे निकलो तब सुख मिलेगा। सार तो मैंने समझा वह यह है कि अपना संकल्प ठीक रक्खो। सम्भव है जो मैंने समझा हो वह गलत हो। मैं चाहता हूं कि आज कल के राधास्वामी मत के पैरोकार अन्य संत, मैंने जो समझा व कहा है उसे वे अगर अनुचित समझते हो तो खँडन करें व दुनियाँ को कहदें कि इस बुड्ढे की बात न सुनो, या जिसको उन्होंने सत्य समझा हों वह मुझे भी बतलादें। मुझे अफसोस नहीं है, न मैं अहकारी हूं उनके खंडन से शायद मेरा अज्ञान दूर हो जाये। मैंने अपनी सारी उमर उस मालिक को खोजने व सुख की प्राप्ती के लिये बिताई है। मैंने जो समझा वह बता चला। तुम सुखी रहना चाहते हो तो "शिव सकल्प मस्तु" वेद मार्ग पर चलो। यही मैं कहता हूं और यही दाता दयालजी महाराज ने कहा है। अच्छा विचार रक्खो जो होता है उसकी जड़ में विचार ही है। यदि आपकी समझ में यह आगया है कि जो कुछ हम करते हैं वह कोई ताकत हमसे करवाती है तुम्हारे वस में कुछ भी नहीं है तो इस काल और माया के देश से निकल जाओ। नाम दसवें द्वार से आगे है—स्वामीजी ने भी कहा है।

नाम रहे चौथे पद मांहीं, ये ढूँढे त्रिलोकी माँहीं ।
नाम मन से परे मिलता है । बाबा सावनसिंहजी भी कहा करते थे 'दस द्वारे लंघो ते आगे सदगुरु खलोता' । जब तक मन का साथ है नाम कैसा ? आप लोग मन से अपने इष्ट की मूर्ति बनाते हो—मेरी या बाबा सावनसिंहजी की मूर्ति बनाते हो—कृष्ण कृष्ण, राम राम, करते हो, राधास्वामी, राधास्वामी वाहे गुरू वाहे गुरू जपते हो, यहाँ तो मन का साथ है । ध्यान करने वाला नाम नहीं जप सकता, जप करने वाला ध्यान नहीं कर सकता, यह सचाई है ।

सुमिरन ध्यान भजन का, प्रगटा नहीं प्रभाव
फिर क्या लाभ भया तुम्हें, हाथ पड़ा नहीं दाव ।

आपने सुमिरन, भजन, ध्यान किया, जिस काम के लिये किया उसका पता नहीं लगा तो तुमको क्या मिला ? आप लाख गायत्री मन्त्र जपो, पांच नाम जपो, राधास्वामी जपो अल्ला अल्ला करो गुरू का रूप बनाओ. मेरा रूप बनाओ, किसी का ध्यान करो आप मन के चक्कर से नहीं निकल सकते ।

वाणी कहती है—

सुमिरन ध्यान भजन का प्रगटा नहीं प्रभाव ।
फिर क्या लाभ भया तुम्हें, हाथ पड़ा नहीं दाव ॥

सांसारिक वस्तुयें चाहते हो तो ध्यान योग तुम्हारी सहायता करेगा, स्मरण मदद करेगा, संकल्प या वासना तो मन से ही होती है—जो लोग सांसारिक वासनायें पूरी करना चाहते हैं वे ध्यान से सुखी हो सकते हैं किन्तु एक का ही ध्यान होना चाहिये । यह नहीं आज इसका ध्यान व कल उसका ध्यान । सैकड़ों लोग मेरा साहित्य पढ़ते हैं व हजारों मेरा ध्यान करते हैं उनके काम भी बन जाते हैं मुझे पता भी नहीं न मैं वहां उनके काम करने जाता हूं । यदि मन और संसार से सदा सदा के लिये छूटना चाहते हैं तो मन से परे जाना पड़ेगा । यदि मन नहीं ठहता तो आवागवन रहेगा । मन से

परे जाने के लिये प्रकाश व शब्द का साधन है। यदि मैं गलत हूं तो व्यास वाले व आगरा वाले मेरा खण्डन करें—मुझे दुख नहीं होगा। मैं खुदा तो हूं नहीं, बाबा सावनसिंह जी महाराज ने क्यों मुझे काम काम करने के लिये दबाव डाला ? क्यों कहा कि मैं तुम्हारा सहायक रहूंगा। दाताने भी क्यों मुझे काम करने को कहा ? मैं तो जैसा समझा कह रहा हूं।

यूं ही भरमे और भरमाया, तुमने सत्संग से क्या पाया।

ये गुरु खुद भ्रम में है, तुमको जाल में फँसाते हैं—स्वयं ही सोचो जब ये गुरु नहीं जानते कि कौन उनके रूप से काम लेरहा व ये किसी मरने वाले को लेने नहीं जाते तो क्या इन्होंने हमें बेवकूफ नहीं बनाया ? यह खुद भ्रम में नहीं हैं क्या ? क्या इन्होंने हमें नहीं लूटा ? मेरा अनुभव है कि मैं यहां बैठा जिन्दा हूं—किसी के अन्तर नहीं जाता और मेरा रूप लोगों को पुत्र देता है, दबाई बताता है मदद करता है—मुझे पता नहीं है तो मैं किस बात का यश लूँ। किस बात का मान करूँ। यदि ऐसी बातों के बदले में मैं आप लोगों से धन लेता हूं तो क्या मैं अपराधी नहीं हूं। झूठा मान मान लेने से तरूँगा या डूबूँगा ?

नित्य प्रातः घर से आता हूं—मार्ग में कुछ लोग अपने घरों के सामने खड़े हुए मेरी प्रतीक्षा करते हैं—जब उनके सामने जाता हूं मत्था टेकते हैं—मैं पूछता हूं क्यों खड़े रहते हो, तुमको क्या मिलता है—तो वे कहते हैं कि आपके दर्शन से हमारा सारा दिन प्रसन्नता से गुजरता है—सोचो मैं देता हूं प्रसन्नता, उनका दिन तो उनके अपने ही विश्वास से अपने ही भाव से प्रसन्नता में बिताता है। मैं सचाई इसलिये बताता हूं कि मुझे गुरु बनने का पाप न लगे—गुरु तो लोगों को सहारा देने के लिये झूठ का सहारा लेलेते हैं, किन्तु सतगुरु सत्य ज्ञान ही देता है। मैं गुरु नहीं सतगुरु हुं। आप आजाते हो, मैं बुलाने नहीं जाता, आप तो अपनी खुशी से आते हो।

दाता ने कहा था—

तू तो आया नर देही मैं धर फकीर का भेसा ।
दुःखी जीव को अंग लगाकर लेजा गुरु के देसा ।
तीन ताप से जीव दुखी है निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी ।

जो मैं कहता हुं यही नाम दान है—क्या मेरी बात तुम्हारी समझ में आजावे तो आप लूट से नहीं बचोगे ? आप अपना जीवन मेरी वाणी सुन कर बना सकते हो—बातें समझ जाओ तो कोई किताब पढ़ने की आवश्यकता नहीं—इधर उधर भटकने की जरूरत नहीं ।

सहस कमल भूमध्य की समझ न आई बात ।
त्रिकुटी पद परखा नहीं मन का मचा उत्पात ।।

दाता इन वाणियों का भाव कौन समझेगा ? लोग सहसदल भूमध्य, त्रिकुटी को जानते तो नहीं किन्तु देखा देखी कान में उगली डाल कर आंखें मूँद कर बैठ जाते हैं—ज्योति भी देख लेते है, घटा शंख भी सुन लेते हैं—गुरु रूप भी देख लेते हैं, होता क्या है ? अभ्यास से उठने पर जैसे थे वैसे दुश्मनी, झगड़े, नफरत करते हैं । क्या ये गुरू जो गद्दियों के लिये अदालत में गये—गुरु थे ? क्या उन्होंने गुरू मत को समझा था ?

सहस कमल भूमध्य की समझ न आई बात ।
त्रिकुटी पद परखा नहीं, मनका मचा उत्पात ।।

अभ्यास तो इसलिये है कि मन जरूरी व गैर जरूरी बातों के प्रभाव में न आवे—सुख दुख से ऊपर उठे, समता में आजाये । ऐसा नहीं होता तो अभ्यास किया न किया बराबर है । सहसदल कमल में अधिक विचार फुरनायें आती हैं, अनेक बाद में वहां मन फँसता है; जो मन में फँसा है वह कहे कि मैं अभ्यासी हूं वह कैसा अभ्यासी है ? मैं भी दाता का पागल प्रेमी था मेरा भी मन न ठहरता था ।

कहां सन्न समाध में लव लाया, तुमने सत्संग से क्या पाया।
अभ्यास में अन्तर में तालाव बतख देखते हो वह मनुआ नहीं है। सुन्न में संकल्प बन्द हो जाते हैं।

शब्दार्थ के ज्ञान की नहीं पाई कुछ गम।
समय अमोलक खोगया, नहीं दम है नहीं राम॥

दम शम कहते हैं मन को काबू करना—मैं खुद आप लोगों जैसा अभ्यासी था—मन पर काबू न था, मुझे गुरू मिल गया—कौन आप सतसंगी जिनमें मेरा रूप प्रकट होता है। ये अमरीकन स्त्री यह माता मेरी गुरू है। इसमें भी मेरा रूप प्रकट होता है इनके अन्तर के दृश्यों के अनुभव से मैं अपने दृश्यों को माया मानता हूं। सपने में मैं गिर जाता हूं, कई समय पता नहीं होता कि मैं सपना देख रहा हूं। स्वप्न सत्य लगता है, मैं सत्य कह कर अपनी ड्यूटी पूरी कर रहा हूं।

वाणी कहती है—

क्या हुआ जो शब्द भजन गाया, तुमने सत्संग में क्या पाया।

अर्थ कहते हैं मतलब या मकसद को—तुम वकालत दुकानदारो, नौकरी करते हो, मकसद से काम करने का कि नहीं मिली तो कैसा साधन ?

शब्दार्थ के ज्ञान की नहीं पाई कुछ गम।
समय अमोलक खोगया, नहीं दम है नहीं शम॥

शब्द के साधन से अनुभव होता है—शब्द के साधन से शांति मिलती है उसका मकसद है आवागवन से छूट जाना।

स्वामीजी ने कहा है—

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भ्रम के कूपा॥

अनुभव से साक्षात्कार Reelisation होता है। मैं अब भी जानता हूं—मुझे अनुभव से शान्ति मिली है। आपकी दया से मैं

अब मन के चक्कर मैं नहीं आता—लापर्वाह होगया हुँ—अभ्यास में आगे जाता हूं, उस वस्तु को खोजता हूं जो प्रकृति को देखती व शब्द को सुनती है। वह कुछ है—इसका पता नहीं लगता।

यदि ये सन्त अपनी बीमारियां ठीक करलेते तो इनके लड़के न मरते—दाता की धाम न उजड़ती या आजके सन्त कुछ करके दिखावें—मैंने क्या समझा है—एक तत्व है उसमें हिलोर आती है एक केन्द्र बन जाता है इसमें शूं शूं वह जब ऊँची अवस्था में होती है आप शूं शूं होती है उसे सुरत कह देते हैं उससे नीचे आती है आत्मा हो जाती है इससे नीचे आने पर मन हो जाती है, उससे नीचे यह स्थूल काया है—वास्तव में जीवन है क्या लब खुले और बन्द हुए यही राजे जिंदगानी है—

इस ज्ञान से मुझे शान्ती है। यह अब एक ताकत का खेल है यही मैंने समझा है—उसने सब कुछ बनाया है उसकी मर्जी है वही होता है—होता रहे मैं अब शरणागत हूं।

तुमने सत्सग से क्या पाया,
नहीं समझ में सारतत्व आया।

सन्त कबीर, सावनसिंहजी महाराज, दातादयालजी महाराज को क्या सारतत्व मिला—पता नहीं, मैंने क्या पाया ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं—वह परमतत्व एक एक वे अन्त, अगाध, अपार है, उसका वार पार नहीं—मुझे क्या मिला ? शांति मिली अब मुझे याद आता है—जब मैं दस माह दाता दयालजी को पत्र लिखता रहा—उन्होंने मुझे उत्तर दिया था 'मैं राय साहब शालिग्राम साहब के असलियत, हकीकत, सचाई व शांति पाई है—यदि इस मार्ग पर चलने से इंकार न होवे तो लाहौर आकर मिलो''—उन्होंने जिंदगी की दौड़ में मुझे हकीकत, सचाई व शांति दी। वाणी कहती है—

आसन मारे क्या हुआ, नहीं समाहित चित्त।
तुमने गुरु के संग में, किया न अपना हित्त ॥

साधन करने वाले साधन करते हैं, बगला भगत की तरह आंखें बन्द करे रहते हैं, मन तो ठहरा नहीं होता, विचार चलते रहते हैं। मन कब ठहरेगा ? साधन के साथ सतसंग के मिलने से—अकेले सतसंग सुनने से भी नहीं और बिना सतसंग के साधन से भी नहीं। साधन व सतसंग लगातार मिलने से मन ठहरता है। लेकिन सतसंग पूरे गुरू का होना चाहिये।

माया और काल ने अटकाया, तुमने सतसंग से क्या पाया।

जो अधिक प्रसन्न और अधिक दुखी होता है वह काल के वश में हैं—माया के वश में हैं—कहा गया है- ऐसे लोगों को काल खाता रहता है। जो कभी दुखी कभी सुखी है वह माया के बसीभूत है—वह साधन नहीं है। अरे जिसने मरना है मरेगा—जिसने जीना है जीयेगा—किसका दुःख किसका सुख ? मैं क्यों चिंता करूँगा ? मैंने यह पाया है—

वाणी कहती है—

चेत चेत अब चेतले, चेत के करले काम।
सोच सोच कुछ सोच मन, सोच के जप गुरु नाम ।।

सोच कर गुरु नाम जपने को कहा है। मैं सोचता हूं कि मैं कौन हूं ? गुरु नाम है ज्ञान। ऐसा ज्ञान होने से कि मैं चेतन का बुलबुला हूं—साधन सुमिरन की आवश्यकता नहीं रह जाती—किन्तु मन कभी कभी चंचल होता ही है, इसलिये साधन की जो आदत पड़ी हुई है साधन करता हूं।

राधास्वामी ने सब विधि समझाया,
तुमने सतसग से क्या पाया।

मैं यह कहूं कि मैंने आपको सार भेद दे दिया व मैं राधास्वामी हूं तो गलत नहीं—मैं ही नहीं तुम सब भी राधास्वामी ही हो—किन्तु मैं आपको नहीं कर्मभोग वश अपने को ही समझाता हूं—जो ... नहीं कहा—यदि यह गलत है तो इसका मेरे पर

कोई भार नहीं है—क्यों दाता दयाल ने मुझे यह काम दिया क्यों सावनसिंहजी ने मुझे काम करने को कहा ? मैंने अपनी नीयत साफ रखी है, इस काम में मेरा कोई निजी स्वार्थ नहीं है। यदि मैं बदी रखता तो आज मैं भी दूसरे गुरुओं की तरह लाखों का मालिक होता। इस अमरीकन स्त्री का सारा खर्चा अपनी जेब से देता हूं—

इसको गुरू मानता हूँ—क्योंकि यह चाहती है कि इसकी सहायता मेरे रूप ने की है—दाता दयाल ने कहा था फकीर तुम में ९९ ऐब हैं किन्तु एक सचाई है—एक सचाई से तुम तरजाओगे और अनेकों को तारोगे— मैं इन सबको अपना गुरू मानता हूं जिसकी सहायता मेरे रूप ने की है, सन्त ताराचन्द, कमालपुर वाली माई, दयालदास इनका सबका आदर करता हूं—मुझे गुरू बनने की हवस नहीं—

दाता दयालजी ने कहा था "तुमको सतगुरु राधास्वामी दयाल सतसंगियों के रूप में मिलेंगे और मिलगये इसलिये मैं आप सतसंगियों को नमस्कार करता हूं।

प्रवचन

परम सन्त परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर

(१३ अगस्त १९७६)

तेरी उमरिया बीत गई, खोजत खोजत सार ॥

ये वाणियां सुन सुन कर बालकपन से ही किसी वस्तु की खोज में चला आरहा हूं। जीवन में अमली पहलू से हरेक चीज को देखने का ख्वाहिशमन्द रहा हूं। आज यह शब्द सुना अपनी आत्मा में ख्याल आया क्यों फकीरचन्द यह जो कबीर कहता है कि ...

न्यारा है—उस देश का पता लगा ? क्या तू जानता है ? चूंकि मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कहता हूं। दाता दयालजी महाराज ने भी कहा था तालीम बदलने को—क्या पता मैंने जो समझा वह ठीक है या नहीं।

अवधू हंस देश है न्यारा।

"अवधू" गोरख पंथ के योगी को कहते हैं—कबीर साहब कहते हैं अवधू हंस देश है न्यारा। पहला सवाल है कि हंस किसे कहते हैं—हंस उसे कहते हैं जो हरेक चीज की खोज करता हुआ जांच करता हुआ सार को असलियत को पाना चाहता हो। एक आदमी है उसने विश्वास कर लिया कि अमुक रूप गुरू का पूर्ण है, किसी ने विश्वास कर लिया कि प्रकाश कि ज्योति पूर्ण है—किसी ने और कुछ को पूर्ण मान लिया—कोई अपने विश्वास के साथ कहीं जुड़ा हुआ है—यह जुड़ना ही योग है—जो कहीं जुड़ा हुआ है वही योगी है—योग कहते हैं जोड़ने को कोई गुरू को मालिक मान कर उससे जुड़ा—कोई ॐ को मान रहा है—उस से अपनी सुरत लगाये है—किसी ने प्रकाश के साथ जुड़ कर समाधी लगाई है—क्या ये सब ठीक है ? नहीं वे ठीक नहीं हैं। वे हंस नहीं हैं—गलती पर हैं। उन्होंने बात को छाना नहीं – मैंने छाना है—मैं प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने वाली वस्तु को ढूढता हूं—इसलिये मैं हंस हूं।

अवधू हंस देश है न्यारा।

क्या वह हंस देश निराला है ? हाँ वह देश न्यारा व निराला है—किन्तु अफसोस है कि मैं वहां ठहर नहीं सकता हूं। वह वह देश है जहां मैं प्रकाश को देख कर व शब्द सुनकर और इस देखने सुनने की अवस्था को छोड़ कर मेरी सुरत आगे जाती है वह अवस्था है वह देश—

वाणी कहती है—

तीरथ व्रत और जोग जप तप,
सुरत निरत से न्यारा ।

वह तो तीरथ व्रत जोग जप तप से न्यारा है सुरत निरत से भी न्यारा है । सुरत का प्रकाश व शब्द में पहुंच कर आनन्दित अवस्था में आना सुरत निरत होना है—यह ठीक है किन्तु अफसोस है कि उस देश का पता लगाने के बाद भी वहां ठहर नहीं सकता—वहां ठहरना मेरे वश में नहीं है—इसलिये मैं शरणागत होगया हूं । उस मंजिल पर ठहरना मेरे वश में नहीं है ।

तीन लोक से बाहर डोले काल क्रम पच हारा ।

उस अवस्था में काल कर्म का प्रभाव नहीं होता उसके जानने वाला ही हंस है । मैं कौन हूं ? मेरा घर कहां है ? इस लाइन पर मैं चला था ।

कोरी कोरी भुनी ब्रह्म हुई मैं,
कोई न पावै पारा ।

पता नहीं कबीर कैसे कहता है – किन्तु मैं मानता हूं कि किसी ने पार नहीं पाया—पाया या नहीं मगर मैं समझता हूं इस रहस्य को किसी ने या तो खोजा नहीं और खोजा तो बताया नहीं—इस इस विषय में मैं कबीर के साथ सहमत नहीं हूं ।

मई १९७६ में मैं अमरीका गया था वहाँ आई. सी. शर्मा ने कहा पंडितजी मैं आपकी कदर करता हूं—किन्तु मैं स्वामीजी या कबीर के साथ सहमत नहीं हूं । जो आपका जाती अनुभव है उसका शास्त्रो व ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णन है—मैंने उससे पूछा तुम्हारे पास क्या हक है कबीर और स्वामीमी से असहमत होने का—इनमें क्या त्रुटि है ? उसने कहा कि ब्राह्मण ग्रंथों में अनामी धाम से आगे का बर्णन है—उसने उस स्थान का कुछ नाम भी बताया—उसने कहा वहां तो कबीर साहब या राधास्वामी मत नहीं पहुंचा है—अब मैं क्या करता ? मैंने तो वे किताबें पढ़ी नहीं । मेरे पास दयाल रिसाला था—वह मैंने शर्मा के सामने रख दिया—उसमें चित्र रूप में

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

महः, जनः, तपः भूः, भुवः स्वः सत्यं आदि को समझाया गया है—मैंने कहा देखो यहाँ सबके ऊपर दयालदेश है। तुम्हारे ये ग्रंथ कुछ और कहते हैं और हम दयाल पुरुष कहते हैं—वह तो ब्राह्मण ग्रंथ ले आया था जब मैंने उसे वह चित्र से समझाया तब उसे तसल्ली हुई। उसे सन्तोष हुआ तो मुझे भी खुशी हुई। वह तो शास्त्र जानता है मगर मैं नहीं—मैं क्या बताता? सन्तों का मार्ग आज दुनिया की चीज नहीं है।

कहा भी है—

कोरि कोरि ब्रह्म हुई जैं,
कोई न पाया पारा।

कबीर को ब्राह्मण ग्रंथ का भेद जुलाहा होने के कारण नहीं बताया गया होगा—कबीर संस्कृत भी शायद नहीं जानते हों—उनका जो खडन था उसका मर्म निकालने वाले तो कर्मकांड तक ही थे—साधक नहीं थे। मैं खंडन नहीं करता—आई. सी. शर्मा ने जो कहा ब्राह्मण ग्रंथ से वह सन्तमत की आखिरी मंजिल है। याद रखना सन्तों ने आम बोलचाल की भाषा में वाणियां कहीं—

दाता दयाल ने उर्दू में कहा—कबीर ने भी लोग समझें उस भाषा में कहा—स्वामीजी ने भी आगरे के निकट बोली जाने वाली भाषा में कहा—मैं भी सब लोग समझ सकें ऐसी भाषा में कहता हूं—

वाणी में कहा है—

मंत्र जाप वहाँ न पहुँचे
सुरत................दरवारा।

सुरत को दरबार में पहुंचाना चाहता हूं—वह मगर दरवार में ठहरती नहीं—सुरत का देश अपना है वो दरवार।

॥ मनुष्य बनो ॥

भक्ती का करो अहारा।
बंकनाल चढ़ गर्जन गर्जें
सतगुरु..... ॥

वहां जाने के लिये पहले बंकनाल में चढ़ो शब्द सुनो आगे सद्-गुरु मिलेंगे। बाबा सावनसिंहजी, सोहवजी या मैं मिल गया तो सब कुछ नहीं मिलता। आप निरवार करो हंस हंस से मिल गया तो पार होगया।

अपना रूप

लेखक—दुर्गादास "चमत" टीहरी (काँगड़ा)

रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

१. सत्, चित्त आनन्दरूप जुदा है,
कर्म भोग संसार।
विना विवेक बिना सत्सगत,
कोई न उतरे पार।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

२. ब्रह्म मयी है सृष्टि सारी,
तज माया का रूप।
शब्द सार गह अपने अन्तर,
बन भूपों का भूप।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

३. जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों हैं,
साधन के अंग।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

।। मनुष्य बनो ।।

जीवन मुक्त अवस्था रहनी
है सन्तों का संग।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

४. साधन भी बिन गुरु है धोखा,
है अनुभव की बात।
जीवन मुक्त पुरुष की संगत,
काट तनिक इक रात।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

५. शब्द आकाशी गुण है प्यारे,
सार शब्द है जात।
बिरला गुरुमुख जाने इनको,
यह सतगुरु की दात।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

६. शब्द नहीं प्रकाश नहीं है,
न वहाँ कोई रूप।
अद्भुत शान्ति है वहाँ प्यारे,
वर्णन से है दूर।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

७. अगम, अकह का क्या करूँ वर्णन,
है अनुभव का ज्ञान।
पूर्ण पुरुष की संगत कर के,
धर स्वामी का ध्यान।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

८. फकीर कृपा से दर्शन पाया,
धन धन तेरी जात।
काम तेरे को कर जाऊँगा,
ले सतगुरु का साथ।
रे, प्राणी अपना रूप सम्भाल।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री प्रभूदयाल मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन लेखराज नगर अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परम दयाल फकीरचन्द्रजी महाराज

७—मैं सुधा मीतल यह घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टूबर १९७६

सुधा मीतल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

महर्षि शिवव्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	१०)
श्री मद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
,, भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
कबीर योग प्रथम भाग	२)५०
,, द्वितीय भाग	२)७५
,, तृतीय भाग	१)७५
कबीर आत्म ज्ञान प्रकाश	३)
प्रणामगति योग	)७५
उपासना योग	१)
कर्म रहस्य	१)
आनन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
ख्याल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	३)७५
शाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
शाही भिखारी	३)५०
शाही जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)५०
ताबदार मोती	२)५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिंसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	१)५०

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

या

सम्पादक मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक नं०

श्री

सम्पादक— प्रभुदयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक— श्रीमती ... मीतल,
शिव ... नगर

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh